DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Samksrit
S.R.A.P. college, Bara chakia
BRABU – Muzaffarpur

B.A. (Hons.) part – I
Subject – Samksrit
Paper – I

5×3 = 15 Marks

कारक सूत्र – व्याख्या
(चतुर्थी विभक्ति)

17. रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (1/4/33)

व्याख्या:– रुचि अर्थ वाले धातुओं के प्रयोग में प्रीयमाण (संतुष्ट या प्रसन्न होने वाले व्यक्ति) की सम्प्रदान संज्ञा होती है। यथा– हरये रोचते भक्तिः –(हरि को भक्ति अच्छी लगती है या पसन्द आती है)– यहाँ 'रुचि' अर्थ के 'रुच्' धातु का प्रयोग है। प्रसन्न होनेवाला (प्रीयमाण) हरि है, अतः हरि की 'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः' सूत्र से सम्प्रदान संज्ञा होने पर चतुर्थी हुई। अन्यकर्तृक अभिलाष (इच्छा) को रुचि कहते हैं। यहाँ हरि के मन में भक्ति ने इच्छा उत्पन्न की, अतः इच्छा उत्पन्न करनेवाली भक्ति कर्त्री है और जिसके हृदय में इच्छा जागरित हुई है वह हरि प्रीयमाण है। इसलिए अन्य (भक्ति) कर्तृक अभिलाष (रुचि) होने से प्रीयमाण (हरि) की सम्प्रदान संज्ञा हो गयी। प्रश्न होता है कि 'प्रीयमाण' (सन्तुष्ट होनेवाला) क्यों कहा? उत्तर है– देवदत्ताय रोचते मोदकः पथि – देवदत्त को मार्ग में मोदक अच्छा लगता है– इस उदाहरण में प्रीयमाण देवदत्त है न कि पथ। उक्त सूत्र में 'प्रीयमाण' नहीं कहेंगे तो उक्त उदाहरण में 'पथ' की भी सम्प्रदान संज्ञा हो जायेगी।

क्रमशः जारी